International Journal of Applied Research 2022; 8(3): 09-11

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(3): 09-11
www.allresearchjournal.com
Received: 06-01-2022
Accepted: 09-02-2022

मंजु के. एम.
शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एरणाकुलम, केरल, भारत

Corresponding Author:
मंजु के. एम.
शोधार्थी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एरणाकुलम, केरल, भारत

हिन्दी साहित्य और सिनेमा : मनोहर श्याम जोशी के संदर्भ में

मंजु के. एम.

प्रस्तावना

भारत विश्व का एक अद्भुत देश है, जहाँ बहुजातीय, बहुभाषीय, बहुधर्मी समुदाय परस्पर प्रेम-मिलन और सौहादे से मिलजुलकर रहते है और गौरवशाली राष्ट्र के निर्माण करते हैं। मिली-जुली सामाजिक संस्कृति ही भारत की आंतरिक शक्ति है। हमारी भाषायें न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि हसारी संस्कृति का संवाहक भी है। उनेक भाषायें होनो के बावजूद भी भारतवासी प्रत्येक भाषा का सम्मान करता है, जितना सम्मान- अपनी मातृभाषा से करता है। सभी भाषाओं में हिन्दी ही ऐसी एकमात्र भाषा है, जो उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्वी से लेकर पश्चिम तक बोली और समझी जाती है। यह गौरव का विषय हौ कि हिंदी अज भारत की सीमा लांधकर विश्व के हर कोने तक जा पहूँची है, विश्व के करीब 121 देशों में हिन्दी न केवल पढ़ाई जा रही है, बल्कि शान से बोली भी जा से बोली भी जा रही है। इस व्यापकता के पीछे अन्य कारकों के अलावा सिनेमा भी एक कारक है, जिसके माध्यम से हिन्दी विश्व में सिर ऊँचे खडे रह पाई है।

मनोहर श्याम जोशी : साहित्यकार एंव फिल्मकार

आधुनिक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में गद्याकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, पत्रकार, दूरदर्शन धारावाहिक लेखक, जनवादी-विचारक, फिल्म पटकथा लेखक, उच्चकोटि के संपादक, कुशल प्रवक्ता तथा स्तंभ लेखक के रूप में अनुग्रहीत कलाकर है श्री. मनोहर श्याम जोशी। उन्होंने धारावाहिक और फिल्म लेखन से संबधित 'पटरथा-लेखन" नामक पुस्तक की रचना की है। 'दिनमान" और 'सप्ताहिक हिंदुस्तान के संपादक भी रहे।

वे एक ऐसे लेखक नहीं कि मनोहर श्याम जोशी मूलत: साहित्यकार थे या कहे कि वे एक लेखक थे, जिसका मन साहित्य-लेखन में ज़्यादा रमता था। अपने लेखन जीवन का आरंभ उन्होंने कहानी-लेखक से किया। वे करिब 20 सालों तक पत्रकारीता से जुडी नौकरी करते रहे। इसी दौरात भी उन्होंने बहुत कुछ लिखा और आलोचना एवं साक्षात्कार के क्षेत्र में भी सक्रिया रहे।

मनोहर श्याम जोशी की पहली कहानी 1952 में प्रकाशित हुई। उनकी ज़्यादातर प्रकाशित-अप्रकाशित कहानियाँ उनके किसी कहानी-संग्रह में नहीं है, क्योंकि उनका झुकाव कविता-लेखन की ओर था। इसका एक कारण तो संभवत: यह रहा हो कि इस दौर में उनकी गहरी दोस्ती रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जैसे कवियें से थी। दूसरी बात यह है कि वह अपने साहित्यक गुरु अज्ञेय जी से प्रभावित थे।

कहानी लिखकर साहित्य लेखन करनेवाले जोशीजी को 1980 तक साहित्य की किसी विधा में कुछ खास प्रसिद्धि नहीं मिली थी। 2180 में 47 साल की उम्र में उन्होंने अपना पहला अपन्यास "कुरु-कुरु स्वाहा" लिखा, तो उनकी प्रतिष्ठा साहित्य जगत में अट गया। कथ्य-शिल्प दोनें ही स्तरों पर इस उपन्यास में इस तरह के प्रयेग हूए हैं कि अनेक आलेचकों ने हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में इसकी गणन की है। इसके बाद "कसप" (1982), "हरिया हरक्यूलीज़ की हैरानी" (1994), हमज़ाद" (1996), "ट-टा-प्रोफसर" (2002), "क्याप" (2002) नामक उपन्यास भी लिखे। "क्याप" के लिए जोशीजी को 2006 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। मनोहर श्याम जोशी के जीवन काल में यही छह उपन्यास प्रकाशित हुए थे। 2006 में उनके मरणोपरांत "कौन हूँ मैं" शीर्षक से उनका एक बृहत उपन्यास प्रकाशित हुआ "कपीशजी" ... "वधस्थल" (2009) और "उत्तराधिकारिणी" (2015) उनका अधरा उपन्यास थे।

मनोहर श्याम जोशी ने साहित्य की कई विधाओं में रचना की, लोकिन अपने उपन्यासों के लिए उनको विशेष रूप से याद किया जाता है। उनके उपन्यासों में बौद्धिकता थी है और आम बोलचाल की रोचक शैली भी। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने उपन्यासों के कारण वे हिन्दी में सदा याद किए जाएंगे।

पटकथा-लेखक के रूप में योगदान

1959 में केंद्रिय सेवा में जेशीजी का चयन हो गया और वे फिल्म डिविजन में काम करने मुंबई चले गए। जुलाई 1984 को दूरदर्शन पर उनके "हमलोग" नामक पहले धारावाहिक का प्रसाराण आरंभ हुआ। इसकी निर्देशक पी. कुमार वासुदेव था। इसकी कहानी इतनी मज़बूत है कि इस धारावाहिक के साथ इसके लेखक का नाम भी प्रसिदध हुआ। यह एक निम्न-मध्यवर्गेय संयुक्त परिवार की कहानी है "विविधता में एकता" वाले "बसेसरनाथ" के परिवार की इस कहानी ने घर-घर में चर्चा का विषय बना। "छोटा परिवार सुखी परिवार" के आंदर्श को लोकप्रियता बनाया के उद्देश्य से इस धारावाहिक का निर्माण हुआ था। लेकिन कहानी कहने की शैली इतनी यथार्थापरक थी की दशेकों ने इस की धारावाहिक की भरपूर सराहना की। निम्न-मध्यवर्ग के जीवन से जुड़ी कथा को आधार बनकर तैयार किया गया कोई भी धारावाहिक इतना लोकप्रिय नही हो सकता है, जैसे "हमलोग"।

"हमलेग" के बाद जब "बुनियाद" नामक धारावाहिक का प्रसारण हुआ तो उसने लेखक के रूप में जोशीजी को लोकप्रिय के शिखर पर बहूँचा दिया। "बुनियाद" की कहानी एक ऐसे परिवार की तीन पीढयों की कहानी है, जो विभाजन के समय लाहौर में सड़क उठे दंगों की तबाही में जिसका सबकुछ बरबाद हो गया। भारत की आज़ादी के साथ हुए बँटवारे में सरहद के उस पार से इस पार आ गए लोगों की स्मृतियों की कहानी है "बुनियाद"। स्मृतियाँ सामूहिक है - खोने की कसक दोनों ओर है। टेलिविज़न के परदे पर स्मृतियों की यह सबसे बड़ी कथा थी। आज़ादी के बाद दिल्ली में किस तरह का समाज बना, किस तरह के आदर्श पीछे छुट गए, कितने सपनों को यथार्थ की भयावहता ने कुचलकर रख दिया - धारावाहिक में विभाजन और उससे जुड़े नैतिकता के सवालों को भी परखने की कोशिश की गई है। प्रसिद्ध मीडिया-आलोचक सुधीर पचौरी ने इस धारावाहिक के बारे में लिखा है कि अपने तमाम फिल्मी लटकों-झटकों के बावजूद, हमारे लाख नाक-भौं सिकोडने के बावजूद जिस निरंतरता से "बुनियाद" ने एक-से-एक चरित्र हमें दिए, उतने दूरदर्शन ने अब तक के इतिहास में न दिए होंगे। "बुनियाद" का निर्देशन रमेश सिप्पी ने किया था।

पारिवारिक धारावाहिकों के अलावा दूरर्दशन के लिए हास्य-व्यंग्य के धारावाहिक "मुगोरीलाल के हसीन सपनें" लिख और पर्याप्त प्रसिद्धि मिली। राजनीतिक व्यंग्य पर आधारित धारावाहिक "कक्काजी कहिन" के लेखक के रूप में भी मनोहर श्याम जोशी को याद किया जाता है। जोशिजी ने "सप्ताहिक हिंदुस्तान" में "नेताजी कहिन" नामक व्यंग्य स्तंभ लिख तो वह भी लोकप्रिय बने।

जोशीजी ने "हमराही" और "ज़मीन आसमान" जैसे कुछ अन्य धारावाहिकों का लेखन किया था। कमाई या व्यवसायिकता के लिए उन्होंने कहानी से समझौंता करने से मन कर दिया और इस धारावाहिक के लेखन से स्वयं को अलग कर लिया। लेखनीय स्वाभिमान से उनहोंने कभी समझौता नहीं किया था।

1990 के बाद देश में केबल टीवी का दौर आया और धीरे-धीरे भारतीय आकाश पर अनेक निजी चैनल आ गए। पहले केवल दूरर्दशन पर ही धारावाहियों का प्रसारण होता था। बाद में निजी चैनलों में सीरियल प्रसारित करने की होड़ मच गई। धीरे-धीरे टेलिविज़न परदे पर से कहानियों की विदाई होने लगी और सफलता के नाम बर सथाकथित फॉर्मूले आजामाए जाने लगे। ऐसे दौर में लेखक के रूप में इस माध्यम से उन्होंने धीरे-धीरे स्वयं को अलग कर लिया।

निजी टेलिविज़न चैनलों के दौर में उन्होंने केवल एक निजी टीवी चैनल के लिए धारावाहिक लिख-स्टार प्लस के लिए। जब स्वतंत्रता की 50 वीं सालागिरा मनाई जा रही थी, तब स्टार प्लस ने "गाथा" नामक धारावाहिक

की योजना बनाई। तब लेखक मनोहर श्याम जोशी थे और उनका निर्देशन रमेश सिप्पी ने हे किया था। इस धारावाहिक में एक हिंदु और मुसलमान परिवार की कहानी के माध्यम से यह दिखाने का प्रयासं किया था कि आज़ादी के पचास सालों में सामाजिक स्तर पर भारत ने क्या खोया, क्या पाया? लेकिन इस धारावाहिक को सफलता नहीं मिली। चैनलवालों ने कह जाने लग कि कहानी में लटके-झटके डालिए, सफलता के फांमूले डालिए। लेकिन यह बात मनोहर जी के कानों तक पहूँची तो उन्होंने टीवी के लिए सीरियल लिखना छोड दिया।

मनोहर श्याम जोशी ने सिनेमा के क्षेत्र में भी अपना पदार्पण किया। 1989 के बीच "भ्रष्टाचार" (1989) "पाप करते है" (1996) नामक फिल्मों के लिए पटकथा एवं संवाद लेखन भी किया था। फिल्म भ्रष्टाचार में मिथुन चक्रवर्ती और रेखा ने नायक-नायिका की भूमिका निभाती है। पत्रकारिता का धर्म निभाते हुए सामाजिक सुधार करनेवाली "भवानी" की कथा है इसमें। "पापा कहते है" में "स्वीटी" को उसके बचपन के दौरान उसके पिता द्वारा छोड़ दिया जाती है, वह उसकी खोज में निकलती है। पता चलता है कि उसने अन्य महिला से शादी की हे। स्वीटी की मानसिक दृद्ध को अधार बनाकर यह फिल्म का निर्माण हुआ था।

1989 में रिलीज़ हो गया "अप्पू राजा" में मनोहर श्याम जोशी ने डबिंग का काम किया था कमलहासन की प्रशस्त फिल्म "हे राम" के लिए संवाद-लेखन भी किया।

निष्कर्षत : कह सकते है कि मनोहर श्याम जोशी साहित्य को अपनाकर फिल्मी दुनिया में भी अपनी कामयाबी हाज़िल की है। उनकी रचनायें समाज कल्याण के लिए उपयोगी सिद्ध हुई व्यंग्य लेखन और पत्रकारिता से राजनीतिज्ञों को भी चिंता करने का अवसर उन्होंने प्रदान किया था।

संदर्भ सूची

1. इलेकट्रोनिक मीडिया एवं सुचना प्रौद्योगिकी, डो. यु.सी. गुप्ता ; पृ :88
2. हंस-फरवरी 2013, संपादक-राजेद्र यादव ; पृ :11